IJAER/ May-June 2023/Volume-12/Issue-3 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

गोपालदास नीरज के काव्य में प्रकृति चित्रण

डॉ देवीलाल रोझ

सहायक आचार्य, हिंदी

एसबीडी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सरदारशहर

सार

आधुनिक हिंदी काव्यधारा में छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, नवगीत के बाद समकालीन कविता आती है। इस संपूर्ण कालखंड के नीरज साक्षी रह चुके हैं। हिंदी में ढेर सारे वादों की और वादों से घिरी काव्य निर्मिति हुई किंतु नीरज ने अपने आपको किसी एक विशिष्ट काव्यधारा में शामिल नहीं किया। वे निरंतर प्रगतिशील कवि के रूप में अपनी पहचान बना चुके हैं। नीरज की कविता पर आलोचकों का मुख्य आरोप यह है कि उनकी कविताओं में परस्पर विरोधी प्रवृत्तियाँ अधिक मिलती हैं। लेकिन इस समस्या का समाधान इतना ही है कि किसी एक विशिष्ट विचारधारा में नीरज ने खुद को कैद नहीं किया और नहीं नीरज किसी एक विशिष्ट विचार दृष्टि के गुलाम बने । c उन्होंने हिंदी कविता को जनसामान्य तक पहुँचाया है। राष्ट्रभाषा के प्रचार और प्रसार में नीरज का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है और उसे स्वीकार न करना निश्चित ही कृतघ्नता ही होगी।

मुख्य शब्द: *काव्य, प्रकृति चित्रण*

परिचय

नीरज की लोकप्रियता संसार के किसी भी व्यक्ति के लिए निश्चित ही ईर्ष्या की वस्तु है। बीसवीं सदी के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि के रूप में नीरज का स्थान शिखर पर है। केवल 19 साल की आयु में ही नीरज ने जो शोहरत हासिल की, अपनी काव्य प्रतिभा के बल पर जिसे उन्होंने आज तक बरकरार रखा है, आज भी नीरज जिस मुकाम पर पहुँचे हैं, वहाँ किसी को भी पहुँचना आसान नहीं है, बल्कि बहुत ही मुश्किल है।

आधुनिक कविता के क्षेत्र में बीसवीं सदी अपना एक अलग स्थान रखती है। आधुनिक कविता अनेक संप्रदायों में विभाजित बोकर हमारे सामने आती है। आधुनिक हिंदी काव्यधारा द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद से आगे नई कविता की ओर चली ! नई कविता का आविर्भाव 'दूसरा सप्तक' के बाद लगभग 1951 के आसपास हुआ। 'नवगीत' प्रंप्रा भी इसी वक्त पैदा हुई। इसका उद्गम भी शायद इसी काल में हुआ ।

नवगीतकारों में अंचल, बच्चन तथा नीरज महत्त्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय कवि हैं। नवगीत्कारों में गोपालदास सकसेना 'नीरज' का स्थान अपनी अलग अहमियत रखता है क्योंकि नीरज की प्रसिद्धि है एक सशक्त गीतकार के रूप में' ही ।

आधुनिक हिंदी काव्यधारा में छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, नवगीत के बाद समकालीन कविता आती है। इस संपूर्ण कालखंड के नीरज साक्षी रह चुके हैं। हिंदी में ढेर सारे वादों की और वादों से घिरी काव्य निर्मिति हुई किंतु नीरज ने अपने आपको किसी एक विशिष्ट काव्यधारा में शामिल नहीं किया। वे निरंतर प्रगतिशील कवि के रूप में अपनी पहचान बना चुके हैं।

'प्राणगीत' (1953) काव्यसंग्रह की भूमिका में कवि नीरज ने सर्वप्रथम अपने काव्य के चार सत्यों का उल्लेख किया है-

(1) सौंदर्य

(2) प्रेम

(3) मृत्यु

(4) रोटी

नीरज की कविता इन चार सत्यों को स्वीकृत करते हुए अपनी मंजिल की ओर बढ़ती है। कवि नीरज ने कविता को सहज एवं स्वाभाविक माना है परंतु न तो वे कविता के लिए किसी विशेष सिद्धांत का निर्धारण करते हैं और न ही किसी वाद का समर्थन करते हैं।

नीरज जिस समय काव्यसृजन कर रहे थे उस समय छायावाद, हालावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, अकविता, समकालीन कविता ऐसे अनेक वाद चल रहे थे किंतु नीरज ने उन वादों में कहीं भी, कोई भी अकारण रुचि नहीं दिखाई और न खुद के ऊपर कोई संबल चिपकाना पसंद किया।

नीरज की कविता 'काव्य कला के लिए सिद्धांत मानती बल्कि 'काव्य जीवन के लिए' उपयुक्त मानती है

नीरज के अनुसार -

'दोस्त! तुम ठीक ही कहते हो

सचमुच मैं कवि नहीं हूँ!

कवि के लिए तो कला सिर्फ कला होती है

और मेरे लिए कला धूप है!

धूप जो सोये संसार को जगाती है ! "

नीरज की काव्ययात्रा :

यद्यपि नीरज ने कुछ निबंध और गद्य गीत एवं दो कहानियाँ तथा 'पंत-कला काव्य और दर्शन' नामक एक समीक्षा ग्रंथ लिखकर विभिन्न साहित्य रूपों के प्रति अपनी रुचि प्रकट की है लेकिन मुख्यतः नीरज कवि ही है और उनका कवि जीवन विधिवत् सन 1942 में प्रारंभ हुआ।

नीरज की काव्ययात्रा का आरंभ 'संघर्ष' इस काव्य संकलन से शुरू होता है। प्रस्तुत काव्यकृति 1944 में प्रकाशित हुई थी । जहाँ से लेकर बीसवीं शती के अंतिम दशक तक उनका कारवाँ आया है। नब्बे दशक में प्रकाशित अंतिम काव्यकृति 'नीरज की गीतिकाएँ' तक नीरज की कविता के अनेक संग्रह तथा संकलन प्रकाशित हुए हैं ।

उद्देश्य

1. नीरज जटिल से जटिल विषय को भी अपनी सुलभ शैली में प्रयुक्त करते हैं।
2. नीरज की काव्ययात्रा का आरंभ 'संघर्ष' इस काव्य संकलन से शुरू होता है।

नीरज की काव्यकृतियों का अनुशीलन

नीरज की काव्ययात्रा सन 1944 से शुरू होती है तथा बीसवीं शती के अंतिम दशक तक उसका सफर बरकरार है जिसे हम काव्ययात्रा में स्पष्ट देखते हैं। यहाँ नीरज की कुछ शीर्षस्थ कृतियों का परिचय प्रस्तुत किया गया है।

संघर्ष (1944) :

नीरज की काव्ययात्रा का यह प्रथम संकलन माना जाता है, जिसमें उन्होंने स्वयं डॉ. बच्चन के प्रभाव को स्वीकार किया है। इतना ही नहीं बल्कि यह पुस्तक भी डॉ. बच्चन को समर्पित की है। 20

स्वयं नीरज के अनुसार इस संकलन में पाठकों को उनके किशोर मन की छटपटाहट के अलावा कुछ नहीं मिलता। इस संकलन पर बच्चन के 'निशा निमंत्रण' और 'एकांत संगीत का गहरा प्रभाव है। भाषा और छंद ही नहीं भावभूमि भी बच्चन की ही है। प्रस्तुत संकलन नीरज ने 'नदी किनारे' (1958) के नाम से प्रकाशित किया ।

अंतर्ध्वनि (1946) :

नीरज का कालानुक्रम से यह दूसरा काव्यसंग्रह है । इस काव्यसंग्रह का मूलस्वर छायावादी और छायावादोत्तर रोमांस का है। किंतु इस काव्यसंग्रह में प्रगतिशील विचारधारा स्पष्ट नजर आती है। इस संकलन में उन्होंने अपनी विशिष्टता को उपलब्ध करने के लिए सचेत प्रयास प्रारंभ किया है। इस संकलन की प्रारंभिक कविताओं पर निराला, पंत, महादेवी और डॉ. बच्चन की भाषा शैली का काफी प्रभाव दिखाई देता है। उदाहरण के लिए 'जयति हिंद', 'कब्र का दिया', 'दूर मत करना चरण' कविताएँ उल्लेखनीय हैं।

विभावरी (1951)

नीरज का कालानुक्रम से यह तीसरा काव्यसंकलन 1951 में प्रकाशित हुआ । इसमें सर्वप्रथम कवि की अपनी विशिष्टताओं के दर्शन होते हैं। 'विभावरी' में कवि जीवन तथा यौवन की क्षणभंगुरता, मृत्यु, नियति आदि की बार-बार चर्चा करता है। इस संकलन में कवि अपनी 'सुनयना' से जी भर पीने और पिलाने का आग्रह करता है। इसमें मृत्यु और यातना के स्वर ही प्रधान रूप में पाठकों के सामने आते हैं।

कवि अपनी प्रियतमा को रूप के अभिमान को त्याग दो यह बताता है क्योंकि कवि के मतानुसार - "कब्र है धरती और कफन है आसमान " मृत्यु भावना से कवि का स्वर बहुत आतंकित हुआ है। जन्म में ही वह मरण का त्यौहार देखता है, तक उसे लगता है

" भूमि से, नभ से, नरक से, स्वर्ग से भी दूर

हो कहीं इंसान, पर है मौत से मजबूर "

यहाँ वासना इंसान को जीवन में दर-ब-दर घुमाती है जिसे 'विभावरी' में कवि ने दिखाया है। कवि अतृप्त वासना के कवि के रूप में सामने आता है। 'सागरों की देह' यह कविता उल्लेखनीय है ।

" खिसक - खिसक जाता उरोज से अभी लाज पट

अंग-अंग में अभी अनंग तरंगित कर्षण केलिभवन के तरुणदीप की रूप शिखा पर

अभी शलभ के जलने का उल्लास शेष है"

लिख लिख भेजत पाती' (1956) :

कवि नीरज काव्यपाठ करने के लिए किसी बड़े नगर में शायद कोलकाता गए थे। जब वह वापस अपने घर लौटे तो घर पर उन्हें किसी महिला के द्वारा लिखा गया पत्र मिला। कवि ने इसका जबाब दिया और यह पत्राचार का सिलसिला आगे शुरु हुआ। इस

महिला के पत्र प्रायः अंग्रेजी में आते थे, जिसके अनुवाद स्वयं नीरज ने किए और इस नाम से प्रकाशित किए। इस शृंखला की कुछ कविताएँ बाद में प्रकाशित 'नीरज की पाती' में भी संकलित नजर आती हैं।

इस संकलन में भी नीरज प्रेम, सौंदर्य, मृत्यु और मानवता की चर्चा करते हैं।

दर्द दिया है (1956) :

कवि इस काव्यसंग्रह के माध्यम से प्रेम की महत्ता को स्पष्ट करता है। "मानवीय संबंधों में मेरे विचार से प्रेम का संबंध सर्वश्रेष्ठ है और प्रेम विशेष रूप से 'मानवप्रेम' मेरी कविता का मूल स्वर है" यह कवि का अभिप्राय है।

इस संकलन की कविताएँ प्रेम, प्रगति, काव्यकला, और कविधर्म से संबंधित हैं। 'मेरा गीत दिया बन जाए', 'अब जमाने को खबर कर दो कि नीरज गा रहा है, 'मैं कवि नहीं हूँ', 'काव्य को पर वाद का कंगन न बनने दो' आदि उल्लेखनीय हैं।

"दोस्त! तुम ठीक ही कहते हो

सचमुच मैं कवि नहीं हूँ!

होते हैं कवि, वे नहीं गाते हैं

दुखी - दलित जनता के पास नहीं जाते हैं।

जाते भी हैं तो शरमाते हैं,

अपने ही बंद कमरे में

साधना करते हैं,

बादर बरस गयो (1958) :

नीरज का प्रस्तुत काव्यसंग्रह मूलतः कवि की स्वच्छंदतावादी और रूमानी कविताओं का संग्रह है। अधिकांश कविताएँ विरह-मिलन, रूप-शृंगार, जीवन की क्षणिकता तथा जन्म - मृत्यु, ध्वंस से संबंधित हैं ।

'रुके न जब तक सांस', 'मुस्कुराकर चल मुसाफिर', 'चाँदी का यह देश' और 'मुश्किलों में मुस्कुराना धर्म है' आदि उल्लेखनीय कविताएँ हैं। इन कविताओं में एक मुसाफिर जो सदैव आगे बढ़ने की मन में प्रेरणा लेकर चलता है । पथिक का यह बिंब काफी लोकप्रिय है जिसे हरएक कवि ने प्रयुक्त किया है।

'चाँदी का यह देश' कविता द्रष्टव्य है -

"चाँदी का यह देश यहाँ के छलिया राजकुमार

सोच समझकर करना पंछी यहाँ किसी से प्यार"

आसावरी (1958) :

इस काव्यसंकलन की कविताएँ भी अधिकांश प्रेम, शृंगार, विरह और मिलन की रुमानी अभिव्यक्तियाँ हैं । एक सुंदर कविता है 'सपन झरे फूल से' जिसनें जीवन की क्षणिकता और मृत्यु की अटलता दिखाई देती है । इस कविता से ही नीरज कविसम्मेलन के शीर्ष कवि के रूप में परिचित हुए ।

'हम सब अमरिकन खिलौने हैं, कविता का एक अंश -

" हम सब अमरिकन खिलौने है !

वैसे हम देखने में आदमी हैं

शक्ल भी हमारी बहुत सुंदर है,

खंजन से लोचन हैं।

पूनों-सा श्वेत गोर वर्ण है,

लेकिन हम भीतर से गंदे और घिनौने हैं ।"

दो गीत (1958) :

'दो गीत' का पूर्वार्ध 'मृत्यु - गीत' है। यह एक मार्मिक और भावपूर्ण कविता है । मृत्यु नीरज की कविता का एक प्रमुख आकर्षण रहा है। इसमें कवि ने मृत्यु अर्थात जीवन की क्षणिकता को जहाँ दिखाया है वहाँ दूसरी ओर जीवन के प्रति आस्था भी दिखाई हैं। जीवन के आखरी पड़ाव के रूप में कवि ने मौत को माना है और इस अटल सत्य को वीर की तरह हमें चुनौतियों के रूप में अपनाना है इसका जिक्र यहाँ मिलता है। ये सारी इस कविता की विशेषताएँ हैं। मृत्यु नीरज की एक प्रिय विषय वस्तु है जिससे कुछ आलोचक नीरज को मृत्युवादी कवि कहते हैं। लेकिन मृत्यु बोध आधुनिक कविता का एक प्रमुख स्वर माना जाता है।

कवि नश्वरता के भीतर जीवन की अमरता का दर्शन अपनी कलम से देता है क्योंकि जीवन पर कवि का भरोसा अटूट है -

" मिट्टी के पुतली में है एक ऐसा स्वप्न

जिसके कारण इंसान नहीं मर सकता है"

गीत भी अगीत भी (1960) :

नीरज की प्रस्तुत काव्यकृति भी प्रेम पर आधारित है। इसकी मूल भावभूमि प्रेम तथा निर्वेद की है। कई कविताएँ निर्वेद तथा थकान को अभिव्यक्त करती हैं, जो नीरज के वैष्णववादी संस्कारों का परिपाक है। जैसे - 'माँ, अब गोद सुला ले', 'साधो ! हम चौसर की गोटी' आदि। कुछ कविताएँ भारत और चीन संघर्ष से उत्पन्न राष्ट्रीय आवेश तथा आवेग को दिखाती हैं ।

'आदम का लहू' कविता का स्वर भिन्न है जो पाठकों को प्रभावित किए बगैर नहीं रहता

" मिट जाती है हर नादिरशाही, मुड़ जाते हैं रुख तलवारों के

ढह जाते हैं गुंबद महलों के, झुक जाते हैं ताज पहाड़ों के जब भी पानी पर आता है, आदम का लहू, आदम का लहू जुल्मों से कहाँ घबराता है, आदम का लहू, आदम का लहू" प्रस्तुत कविता निश्चित ही एक महत्त्वपूर्ण प्रगतिशील कविता है।

वंशीवट सूना है :

नीरज की यह अंतिम प्रकाशित काव्यकृति है । इस काव्यसंकलन की अधिकांश कविताएँ सामाजिक पृष्ठभूमि लेकर ही पाठकों के सामने आती हैं।

इस काव्य संकलन में भी नीरज प्रेम, सौंदर्य, मृत्यु, रोटी, मानवता आदि की चर्चा करता है । कवि अपने तनहा जीवन का परिचय इस प्रकार देता है। यहाँ कवि का अपना नाम भी 'गोपाल' ही है यह द्रष्टव्य है -

" वंशीवट सूना

है अकेला गोपाल

काल कौर बने सब

गोपी ग्वाल बाल

भोगूँ फिर दिन का ये चौथा पहर किसके लिए

धारण करूँ अब ये पीतांबर किसके लिए ।"

कवि अपनी भाषा का परिचय इस प्रकार देता है –

गोपालदास नीरज के काव्य में प्रकृति चित्रण

गोपालदास नीरज भारतीय हिंदी साहित्य के मशहूर कवि थे और उन्होंने अपने काव्य में प्रकृति को विविधता से चित्रित किया है। उनकी कविताओं में प्रकृति का वर्णन उसकी सुंदरता, शांति, उत्साह और प्राकृतिक तत्वों की महिमा को प्रकट करता है। नीरज ने अपने काव्य में पहाड़ों, नदियों, वनों, पुष्पों, पेड़-पौधों और जलवायु के माध्यम से प्रकृति का चित्रण किया है। उन्होंने प्राकृतिक दृश्यों के माध्यम से मनोभावना का व्यक्तिगतीकरण किया है और अपनी कविताओं में प्रकृति को एक साथ जीवंत, प्रभावशाली और आनंददायक रूप में प्रस्तुत किया है।

उनकी कविता "आज अख़बार में पढ़ा था" में, वह प्रकृति की सुंदरता को वर्णन करते हैं, जैसे:

"गिरि-शिखरों से सरोवरों तक, फूलों से भरी हर झील। आज मैंने जग को बताया, मेरे दिल में बसी ये जील।"

उनकी कविता "वसंत" में, प्रकृति के सौंदर्य को वर्णन किया गया है, जैसे:

"उठी जगमगाती है न "उठी जगमगाती है नवीनता निशा की, मिटी अँधेरी घटा, छाई है सुहानी धूप। क्षितिज पर खेलती हैं रंग-बिरंगी छातियाँ, गुंजते हैं पक्षियों के मधुर संगीत।"

इसके अलावा, उनकी कविता "वन" में, वन की प्राकृतिक उपस्थिति को बयां किया गया है, जैसे:

"क्षितिज के शिखर से लहरता हुआ पर्वत, कानों में मधुर सरिता, प्राणों में सुहानी शीतलता। चिड़ियाँ गुँज उठी हैं गहरे वन में, प्रकृति ने वर्णों का एक महान त्योहार मनाया है।"

गोपालदास नीरज ने अपने काव्य में प्रकृति के रूप, रंग, गंध और ताजगी को सुंदरता से वर्णित किया है। उनके कविताओं में प्रकृति अपनी प्राकृतिक रूपरेखा में व्यक्त होती है और पाठकों को आनंद और प्रकृति के साथ एक अनुभव में ले जाती है।

गोपालदास नीरज की कविता "बादल राग" में वे बादलों के माध्यम से प्रकृति को चित्रित करते हैं, जैसे:

"देखो बादल राग का आँचल लपटा हुआ, मिटी धरती पर बूंदों का सागर छलक रहा। वीणा के सुर उठते हैं गगन में, भूमि पे गीत रंगी है, प्रकृति के सुंदरता का अद्भुत संगम सजा हुआ है।"

इस तरह से, गोपालदास नीरज के काव्य में प्रकृति का चित्रण अद्वितीय और रसभरा होता है। उन्होंने प्रकृति को जीवंत, स्फूर्तिशील और प्रेरक रूप में चित्रित किया है, जिससे पाठकों को एक नई प्रकृति के साथ अद्वितीय अनुभव मिलता है।

गोपालदास नीरज के काव्य में प्रकृति चित्रण के अलावा, उन्होंने प्रकृति के माध्यम से मानवीय भावनाओं को भी प्रकट किया है। उनकी कविताओं में प्रकृति एक नगरीकृत समाज से भिन्नता और आत्मीयता का प्रतीक है। वे प्रकृति के माध्यम से मनुष्य की स्वाभाविकता, अन्तरंगता और उसके आत्मसंगति को दर्शाते हैं।

उनकी कविता "अनुग्रह" में वे प्रकृति की ओर से मानवीय अनुग्रह का वर्णन करते हैं, जैसे:

"जो जग में अपने दरवाज़े खोले हैं, वे धरती के दृढ़ वचन सुनाते हैं। वे सुंदर फूलों को गर्भधारण करें, वे नदियों की आवाज़ सुनाते हैं।"

इसके अलावा, उनकी कविता "धरती धनी है" में, वे प्रकृति के माध्यम से मानवीय संबंधों की महत्वपूर्णता को दिखाते हैं, जैसे:

"धरती के सूक्ष्म राज बतलाते हैं, जो दरवाज़े खोलते हैं, वे उठाते हैं। मन की गहराई से जो पुकारते हैं, धरती के हर बाल को उठाते हैं।"

इस तरह से, गोपालदास नीरज ने परकृति को मानवीय भावनाओं के साथ जोड़कर एक संयोग सृजित किया है। उनकी कविताओं में प्रकृति मानवीय जीवन की अनन्तता, प्रेम, संयम, शांति और समर्पण का प्रतीक है।

गोपालदास नीरज की कविता "उदय" में, प्रकृति के माध्यम से सूर्योदय के रंगीन दृश्य का वर्णन किया गया है, जैसे:

"उदय की किरणों ने चारों ओर चमकाया है जग, धरती गर्व से फूलों से सज रही है बाग। प्रकृति ने सुंदर रंगों का एक अद्वितीय संगम रचाया है, जगत को जीने का आनंद नया तरीके से बताया है।"

गोपालदास नीरज की कविता "प्रकृति का निर्माण" में, वे प्रकृति के माध्यम से मनुष्य के आनंद के स्रोत को व्यक्त करते हैं, जैसे:

"स्वर्ग का निर्माण करते हैं प्रकृति के हाथ, मनुष्य अपनी दुनिया में पाता है आनंद का बांट। धरती की गोद में हर बाल प्यार से सजता है, प्रकृति ने स्वर्ग का आयाम मनुष्य के लिए बनाया है।"

गोपालदास नीरज के काव्य में प्रकृति का चित्रन केवल सौंदर्यपूर्ण वर्णन के माध्यम से ही, बल्कि गोपालदास नीरज के काव्य में प्रकृति का चित्रण भावनाओं, अनुभवों और मनोभावों के माध्यम से भी किया गया है। उनकी कविताओं में प्रकृति व्यक्तित्व की भांति हर्ष, दुःख, समाधान और आत्म-प्रकाश का प्रतीक है।

उनकी कविता "प्रकृति और तुम" में, वे प्रकृति के साथ व्यक्तिगत संबंध को दर्शाते हैं, जैसे:

"तुम्हारी संगति से जग चमक उठा है, मन में आनंद और हृदय में खुशियाँ लिए खड़ा है। तुम्हारे साथ जीने का आनंद अलग है, प्रकृति के साथ संगति मन को नवीनता से भर देती है।"

गोपालदास नीरज की कविता "विचार" में, प्रकृति के माध्यम से मन की विचारशक्ति का वर्णन किया गया है, जैसे:

"धरती के गोद में बैठा हूँ, विचारों के साथ, प्रकृति के गुणों से मन को सम्पूर्ण कर रहा हूँ। मन के सुख और दुःख के साथ खेल रहा हूँ, प्रकृति ने विचारों का एक संगम चित्रण किया है।"

गोपालदास नीरज के गोपालदास नीरज के काव्य में प्रकृति का चित्रण न केवल बाह्य रूप से होता है, बल्कि वे उसे आंतरिक रूप से अनुभव और व्यक्त करते हैं। उनकी कविताओं में प्रकृति मानव-भावनाओं के प्रतीक, आध्यात्मिकता का प्रतिष्ठान और मानव-प्रकृति संबंध का विश्लेषण किया जाता है।

उनकी कविता "मृत्यु मेरी दृष्टि में" में, वे प्रकृति के माध्यम से मृत्यु के अद्वितीय रहस्य को व्यक्त करते हैं, जैसे:

"मृत्यु तो जीवन का अद्वितीय अंग है, प्रकृति का एक अद्भुत प्रतीक है। मृत्यु की गोद में ही मैं जीने का रस पाता हूँ, मृत्यु और प्रकृति का विलय जीवन को स्वर्ग बनाता है।"

गोपालदास नीरज की कविता "आदिम प्रकृति" में, वे प्रकृति के माध्यम से आदिम प्राकृतिकता का वर्णन करते हैं, जैसे:

"प्रकृति की गर्भधारण बड़ी रहस्यमयी है, वे हैं आदिम प्राकृतिकता की प्रतिष्ठान। मन के अंतर्मन में जो गुहाएँ छुपी हैं

निष्कर्ष

प्रस्तुत काव्यसंग्रहों के अनुशीलन से हम इस नतीजे पर आते हैं कि नीरज की कविता अनेक वादों से जरूर प्रभावित हुई है। किंतु यह कवि की महानता ही है कि कवि ने किसी भी वाद को स्वीकृत नहीं किया और नहीं उस वाद की वकालत करते हुए अपने आपको उस सीमित दायरे में कैद किया। कवि नीरज के समस्त व्यक्तित्व तथा काव्यकृतियों का अनुशीलन करने के बाद कई बातें हमारे सामने प्रस्तुत होती हैं। जिसे यहाँ उद्घाटित करना इस शोधपत्र का उद्देश्य है। नीरज ने भारतीय दर्शनशास्त्र और अध्यात्म का गहरा अध्ययन किया है। प्रारंभिक दिनों में नीरज की कविता पर हालावादी कवि डॉ. बच्चन का प्रभाव था। किंतु थोड़े ही दिनों बाद कवि ने डॉ. बच्चन के प्रभाव से खुद को आजाद किया। इसमें कोई आशंका नहीं कि नीरज की कविता में वेदना की मात्रा अधिक है। इसके पीछे बचपन से लेकर जवानी तक का उनका जीवन-संघर्ष ही कारण रहा है। कवि ने अपनी प्रथम काव्यकृति का नाम ही 'संघर्ष' ही रखा । जिस प्रकार कवि नीरज ने लड़कर अपने जीवन में जो सफलता अर्जित की उसका ही बिंत्र उनकी कविता में दिखाई देता है।

संदर्भ

1. आज के कवि - ललित मोहन अवस्थी पृ. 157 158
2. नीरज रचनावली 'नदी किनारे खंड 1 पृ. 2
3. वाल्मिकि रामायण सं. प्र. न. जोशी पृ. 7 श्लोक क्र. 15
4. आधुनिक कवि सुमित्रानंदन पंत, भाग 2, पृ. 10
5. 'संघर्ष' की भूमिका नीरज पृ. 4-5
6. वहीं बाबु गुलाबराय पृ. 7
7. नीरज रचनावली 'बादर बरस गयो' खंड पृ. 157
8. नीरज रचनावली 'आसावरी खंड 3 पृ. 33
9. प्रसिद्ध गीतकार नीरज सं. सुदर्शन चोपड़ा, पृ.
10. नीरज की काव्यरचना, सरजु प्रसाद मिश्र पृ. 141
11. नीरज रचनावली दो गीत' खंड 2 पृ. 194
12. नीरज रचनावली 'दर्द दिया है' खंड 2 पृ. 11
13. नीरज रचनावली 'प्राणगीत' खंड 1 पृ. 253
14. नीरज रचनावली 'दर्द दिया है' खंड 2 पृ. 6
15. नीरज रचनावली 'दर्द दिया है' खंड 2 पृ. 131